लंकाधिपति रावण एक विमर्श–रामायण के परिप्रेक्ष्य में

शिवपूजन चौरसिया

लंकाधिपति रावण वाल्मीकीय रामायण में प्रतिनायक के रूप में एक विशिष्ट पात्र है। वह अत्यन्त बुद्धिमान्, महापण्डित, विविध शास्त्रों का ज्ञाता, तेजस्वी, पराक्रमी, रूपवान, विद्वान् एवं भगवान् शंकर का बहुत बड़ा भक्त है। रावण के शासन काल में लंका का वैभव अपने चरम पर है, इसीलिए उसके नगर को 'सोने की लंका' या स्वर्णमयीलंका कहा जाता है। लंकाधिपति रावण को उसकी अच्छाइयों के लिये नहीं बल्कि उसकी बुराइयों के लिये जाना जाता है। क्योंकि हमारे साहित्यकारों के द्वारा उसे पापी, अत्याचारी पर स्त्री (सीता) को हरण करने वाला, देवताओं को हराने वाला, हवन–यज्ञादि को विध्वंस करने वाला, आसुरी शक्तियों से लोगों को आतंकित करने वाला, सज्जनों, ऋषियों आदि को मारने वाला आदि दोषों से युक्त चित्रित किया जाता रहा है।